''उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालय में विद्यार्थियों के सीखने के व्यवहार पर शिक्षण उपागम के प्रभाव का अध्ययन''

''बेटी बचाओ, बेटी पढ़ाओं''

शिक्षा शास्त्र में पीएच.डी की
उपाधि हेतु प्रस्तुत शोध समीक्षा

(Review of Literature)

शोध निर्देशक

डॉ. संध्या शर्मा
(सहायक आचार्य)
शिक्षा संकाय
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय
जयपुर, (राज.)

शोधार्थी

सरिता यादव
JVR-2220
Enroll Number-JVR-1/22/10019

शिक्षाशास्त्र विभाग
ज्योति विद्यापीठ महिला विश्वविद्यालय,
जयपुर, (राज.)

सत्र–2023

''उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालय में विद्यार्थियों के सीखने के व्यवहार पर शिक्षण उपागम के प्रभाव का अध्ययन''

सम्बन्धित साहित्य :

साहित्य–समीक्षा दो शब्दों– 'साहित्य' और 'समीक्षा' से मिलकर बना है। यहां पर साहित्य शब्द परम्परागत अर्थ में प्रयोग न होकर भाषा में सन्दर्भ में प्रयोग किया जाता है, जैसे हिन्दी, अंग्रेजी और संस्कृत साहित्य। किसी विषय वस्तु के अन्तर्गत गद्य, काव्य नाटक, उपन्यास, कहानी आदि आते हैं। अनुसंधान के क्षेत्र में साहित्य किसी ज्ञान की ओर संकेत करता है। जिसके अन्तर्गत सैद्वान्तिक, व्यावहारिक और शोध अध्ययन आते हैं। (भटनागर सुरेश 1998) शिक्षा अनुसंधान, विनोद पुस्तक मन्दिर, आगरा लायल बुक डिपो, मेरठ)।

भारत में हुए शोध कार्यः

1. **शेषाद्वि व रमानी (1995)** ने अपने अध्ययन में अनुसूचित जाति के बच्चों की गृहभाषा का पाठ्यपुस्तकों व शिक्षकों की मानक भाषा से भिन्नता के अनुपात का अध्ययन किया। भाषा में विभिन्न स्तरों पर भिन्नता के प्रभाव का आना स्वतंत्र की (अशान्दिक, बुद्धि, सामाजिक, आर्थिक) पृष्ठभूमि से लिया है। उच्च माध्यमिक प्रकार के मानक भाषा की प्रवीणता व शैक्षिक उपलब्धि पर प्रभाव का अध्ययन किया गया।

2. **तेजोवती (1995)** ने अध्ययन का उद्देश्य उच्च माध्यमिक स्तर पर अंग्रेजी में कौशलों के अर्जन व वातावरणीय कारकों के मध्य संबंध का अध्ययन किया है। अध्ययन में ग्रामीण या शहरी विद्यार्थियों को लिया है। सामाजिक और आर्थिक स्तर को भी लिया गया। जिसमें पाया गया कि वातावरणीय कारकों व सीखने के व्यवहार में सकारात्मक संबंध है। ग्रामीण या शहरी विद्यार्थियों के सामाजिक आर्थिक स्तर का शिक्षण उपागम पर सार्थक प्रभाव पड़ता है। सीखने के

व्यवहार का शहरी क्षेत्र में सार्थक प्रभाव नहीं दिखाई दिया, किन्तु ग्रामीण क्षेत्र में सार्थक अंतर दिखाई पड़ा। अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थी शामिल है।

3. **मोहम्मद (1996)** के अध्ययन का मुख्य उद्‌देश्य विद्यार्थियों के सीखने के व्यवहार में शिक्षण उपागम की उपलब्धि व त्रुटियों पर घरेलू सुविधाओं के प्रभाव का अध्ययन करना था। स्तर उच्चमाध्यमिक (पंजाब स्कूल एज्यूकेशन बोर्ड द्वारा संचालित) विद्यार्थियों को लिया गया। अध्ययन के परिणामों से ज्ञात हुआ कि विद्यार्थियों में सीखने के व्यवहार और शिक्षण उपागम के मध्य सकारात्मक संबंध है।

4. **साहा (1996)** के अध्ययन का उद्देश्य निर्धारित पाठ्यक्रम के अनुरूप विद्यार्थियों के हिन्दी भाषा रचना संबंधी कुल उपलब्धि तथा लिखित भाषा रचना के विशिष्ट क्षेत्रों से संबंधित उपलब्धियों का लिंग एवं जातिगत चर के आधार पर तुलना करना था। कानपुर में स्थित 600 हिन्दी भाषी विद्यार्थियों में 12 यादृ च्छिक रूप से सामान्य जाति के 20 प्रतिशत तथा अल्पसंख्यक में होने से सभी उपस्थिति अनुसूचित जाति के विद्यालयों को न्यादर्श में सम्मिलित किया गया। विद्यार्थियों में सीखने के व्यवहार पर शिक्षण उपागम का प्रभाव सकारात्मक है। विद्यार्थियों के सीखने के व्यवहार पर शिक्षण उपागम का प्रभाव सकारात्मक है।

5. **कोटेश्वर एवं अन्य (1998)** के अध्ययन का उद्देश्य विद्यार्थियों की पठन उपलब्धि पर क्षेत्र के प्रभाव का अध्ययन करना था। समूह को जनसंख्या के चरों के आधार पर विभिन्न समूहों में विभाजित किया गया। अध्ययन में परिणामों से ज्ञात हुआ कि लड़कियों की पठन उपलब्धि लड़कों से बेहतर थी। वर्ग के रूप में चर का प्रभाव पठन उपलब्धि पर दृष्टिगत हुआ। आवासीय रेजीडेन्शियल विद्यालयों के छात्राओं की निरूपत्ति ग्रामीण व शहरी विद्यार्थियों से बेहतर रही। तीन समूहों में ग्रामीण क्षेत्र के उच्च माध्यमिक स्तर विद्यार्थियों की उपलब्धि

सबसे कम रही। उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों की पठन उपलब्धि पर क्षेत्र का प्रभाव नहीं है। उन्होंने सीखने में कई ठौशलों का प्रयोग किया है। उन्होंने सीखने में कई कौशलों का प्रयोग किया है।

6. **रेड्डी (1998)** ने उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में बुद्धि व भाषा विकास के मध्य संबंध का अध्ययन किया। अध्ययन में आन्ध्र प्रदेश के छितूर जिले के 20 विद्यालयों की कक्षा के प्रत्येक से 20 विद्यार्थियों का चयन स्तरीकृत यादृच्छिक विधि से किया गया। शोधकर्त्ती द्वारा भाषा विकास के मापन के लिए लिखित उनका परीक्षण तैयार किया गया। इनका ड्रा ए मेन टेस्ट (रेवेन्स) का प्रयोग किया गया। प्राप्त परिणामों से निष्कर्ष निकलता है कि भाषा विकास से सार्थक रूप से सम्बन्धित है। इसके माध्यम से जीवन में व्यवहार कौशल विकसित होता है।

7. **शर्मा व शर्मा (1998)** ने अपने अध्ययन में भाषायी आठ उप परीक्षणों के अन्तः सम्बन्धों का विश्लेषण किया है। हिन्दी अधिगम को प्रभावित करने वाले कारकों का अध्ययन व्ट्म किया। अध्ययन के लिए न्यादर्श में मेरठ केन्द्र केन्द्रीय विद्यालय के बारह श्रेणी के 20 विद्यार्थियों को लिया गया । न्यादर्श की आयु वर्ग विस्तार 11–15 वर्ष था । न्यादर्श के लिए गुच्छ न्यादर्शन विधि का प्रयोग किया गया। हिन्दी भाषा अधिगम के कारकों को जानने के लिये सर्वेक्षण परीक्षण विधि का प्रयोग किया गया। इन सभी उप परीक्षण सीखने इस विद्यालय में विद्यार्थियों क पदों के शाब्दिक अधिगम की आवश्यकता होती हैं। इस विद्यालय में विद्यार्थियों के सीखने के व्यवहार और शिक्षण उपागमों में चालक सम्बन्ध है।

8. **ढ़ेगर (1998)** ने अपने अध्ययन में पाया कि पिछड़े वर्ग व गैर पिछड़े वर्ग की पठन अध्ययन योग्यता में किये गये परीक्षण के मध्य स्कोर में सार्थक अंतर था। यह अध्ययन पिछड़ी जातियों के पक्ष में था। ग्रामीण क्षेत्र की तुलना में

शहरी क्षेत्र के बच्चे बड़े परिवार की तुलना में छोटे परिवारों में बच्चे निम्न बुद्धि स्तर की तुलना में उच्च बुद्धि स्तर के बच्चे, उच्च चिन्ता स्तर की तुलना में निम्न चिन्ता पर स्तर वाले बच्चे सार्थक रूप से बेहतर थे। प्रथम जन्मक्रम वाले बच्चों में उच्चतम स्कोर प्राप्त किए। इन विद्यार्थियों के सीखने के व्यवहार पर शिक्षण उपागम का प्रभाव थोड़ा कम सकारात्मक था।

9. **शुक्ला प्रभावती (1998)** ने उपलब्धि प्रेरणा एवं साहसिकों में सृजनात्मकता पर शैक्षिक स्तर का प्रभाव पर अनुसंधान कार्य किया। शोध का मुख्य उद्देश्य विलासपुर जिले के बहुस्तरीय विद्यालयों में अध्ययनरत् विद्यार्थियों की उपलब्धि और सृजनात्मकता विद्यार्थियों को दृष्टव्य करना है। शोध का निष्कर्ष निकाला कि विद्यार्थियों की उपलब्धि शैक्षिक स्तर को बढ़ने से नहीं बल्कि जबकि सृजनात्मक शैक्षिक स्तर की बढ़ोत्तरी के साथ पार्क बढ़ती है। इस अध्ययन में उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों के सीखने के व्यवहार पर शिक्षण उपागम के प्रभाव का अध्यापन किया है।

10. **शशि मंगल (2010)** ''केन्द्रीय माध्यमिक शिक्षा बोर्ड तथा माध्यमिक शिक्षा बोर्ड राज की बारहवी शिक्षण उपाय कक्षा बारहवीं की हिन्दी की पाठ्य्–पुस्तकों में निहित शिक्षण उपागम का समीक्षात्मक अध्ययन'' वनस्थली विश्वविद्यलय, राजस्थान में किया है।

उद्देश्य:

(i) केन्द्रीय माध्यमिक की बाहर कक्षा की हिन्दी की गद्य पाठ्य पुस्तकों में निहित शिक्षण उपागम का एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रस्तावित मूल्यों के संदर्भ में समीक्षात्मक अध्ययन किया गया है।

(ii) केन्द्रीय माध्यमिक बोर्ड की बारहवीं की हिन्दी की गद्य पाठ्य पुस्तकों में शिक्षण उपागमों का एन.सी.ई.आर.टी. द्वारा प्रस्तावित मूल्यों के संदर्भ में

समीक्षात्मक अध्ययन किया गया। कुछ क्षेत्र में अनुसूचित जाति तथा जनजातिय के विद्यार्थी पिछड़े रहे है। जैसे जयपुर जिले में 73.4 प्रतिशत छात्रों को उपलब्धि न्यूनतम अधिगम स्तर से कम रही है। अधिकांश विद्यालयों में एक प्रतिशत विद्यार्थी भी 80 प्रतिशत अंक प्राप्त नहीं कर पाए। वे अध्ययन में निपुणता के स्तर तक नहीं पहुंच सकें। यहां अध्ययन की बेहतर सुविधा नहीं है।

11. **लता कमल (2010)** ''हिन्दी विषय शिक्षण द्वारा उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यार्थियों में सृजनात्मकता का विकास एक अध्ययन'', वनस्थली विद्यापीठ विश्वविद्यालय, राजस्थान में किये गए अध्ययन के उद्देश्य–

उद्देश्य :

(i) नियंत्रित व प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों के सीखने के व्यवहार के मध्य फलांकों की तुलना करना।

(ii) विद्यार्थियों में शिक्षण उपागम के मध्य फलांकों की तुलना करना।

(iii) प्रायोगिक समूह के शिक्षा विषय के पूर्व एवं पश्च अकादमी उपलब्धि फलांकों की तुलना करना।

(iv) व्यवहार उपचार के प्रति विद्यार्थियों की प्रतिक्रियाओं का अध्ययन करना।

(v) नियंत्रित व प्रायोगिक समूह के विद्यार्थियों के शिक्षण उपागम के मध्य फलांकों की तुलना करना।

सम्बन्धित विषय में विदेश में हुए शोध कार्यः

12. **लाइट बाउन, (1993)** का अध्ययन एक वृहत् शोध प्रायोजना का एक भाग था, जिसमें अनुप्रस्थ व अनुदैर्ध्य उपागमों का प्रयोग करते हुए कुवैत के फ्रेंच भाषी विद्यार्थियों के कुवैत अंग्रेजी भाषा के विकास का अध्ययन करना था। यद्यपि लाइट बाउन ने पाया कि फ्रेंच भाषी अंग्रेजी को द्वितीय भाषा के रूप में अध्ययन करने में कक्षा–कक्ष विशिष्ट भाषायी वातावरणीय से प्रभावित हुए हैं।

सामान्यतया इन तीनों अध्ययनों से जो चित्र उभरता है, वह यही है कि अधिगमकर्त्ता को स्वाभाविक प्रक्रियात्मक यांत्रिक पर भरोसा करना शिक्षण उपागम चाहिए। उसे कक्षा–कक्ष के शिक्षण उपागम के संचरण द्वारा दीर्घ पथ से लघु पथ में नहीं बदला जा सकता है।

13. **फिलभॉर, (1993)** ने चार विविध कक्षा–कक्ष में सीखने के व्यवहार पर 60 बच्चों पर अनुदैर्ध्य अध्ययन किया। उन्होंने पाया कि न तो कक्षा संघटन का, न ही शिक्षण के सीखने पड़ता इन प्रकार का प्रभाव सीखने अधिगम पर प्रभाव पड़ता है। इन पर अलग–अलग विचार किया गया। जब इन पर साथ–साथ विचार किया गया तो लगा ये दोनों शिक्षण उपागम कारक शिक्षण उपागम को प्रभावित करते हैं।

14. **ब्राउन, (1993)** ने पूर्व विद्यालयी बच्चों के सीखने के व्यवहार का अनुदैर्ध्य अध्ययन किया। न्यादर्श में केवल तीन बच्चों को लिया गया। इन बच्चों के व्यवहार और शिक्षण उपागम पक्षों का विश्लेषण किया गया। बच्चों के विकास को पांच सोपानों में विभक्त किया गया। इन सोपानों का आधार मैसूर में 18–20 जनवरी को रिसर्च एण्ड इनोवेशन आन होम एण्ड स्कूल लैंग्वेज इशूज पर एक सेमिनार का आयोजन किया गया। सेमिनार में विद्यालय में विद्यार्थियों के सीखने के व्यवहार पर विभिन्न प्रपत्र प्रस्तुत किए गए।

(i) उच्च माध्यमिक स्तर पर शिक्षा का माध्यम प्रभावी होना चाहिए।

(ii) मानक विद्यालयी में अध्ययन उपयुक्त शिक्षण विधि से कराया जाना चाहिए।

15. **फ्लीक्स, (1993)** का अध्ययन कील प्रायोजना का एक भाग था, जिसका उद्देश्य शिक्षण उपागम का विभिन्न प्रकार के शिक्षण उपागम का विश्लेषण करना था। यह जानने का शिक्षण उपागम के प्रभाव प्रयास किया गया कि विभिन्न अधिगम संस्थितियों किस प्रकार शिक्षण उपागम के प्रभाव को प्रभावित करती है।

16. **एलिस, (1994)** ने कक्षा–कक्ष के वार्तालाप की प्रक्रियाओं की प्रकृति व उनकी विकास में भूमिका का अध्ययन किया। एलिस ने ब्रिटेन में द्वितीय भाषा के रूप में इसमें, अंग्रेजी के तीन अधिगमकर्त्ता का शिक्षण किया। इसमें कई क्रियाकलाप थे। जिनमें कई प्रयोग के अवसर प्राप्त थे जैसे शारीरिक शिक्षा पाक् व हस्तकला, इसके अलावा अन्य विद्यालयी विषयों के शिक्षण में भी प्रयोग के अवसर थे, जैसे–परिणामों स्वरूप आदर्श के साथ–साथ सम्प्रेषीय प्रदत्त भी शिक्षण उपागम् उपलब्ध है। शिक्षण उपागम के नियंत्रक के लिए बहुमुखी विश्लेषण का प्रयोग किया गया। परिणामों से संकेत मिलता है कि जब विदेशी उपागम के अध्ययन का समय विदेशी उपागम अधिगम महत्त्वपूर्ण योगदान देता है। यह पाया गया कि विदेशी भाषा के अध्ययन में महिलाओं की श्रेणी पुरुषों से उच्च रही। अधिक समय तक अध्ययन करने वाले विद्यार्थियों ने अधिक उच्च श्रेणी प्राप्त है।

17. **लांजर (1997)** के अध्ययन का उद्देश्य मेक्सिन अमेरिकन विद्यार्थियों द्वारा विद्यालयी सामग्री को पढ़ते समय अर्थ रचना करने के तरीकों का परीक्षण करना था । यह उन युक्तियों पर संकेन्द्रित था, जिनका प्रयोग व अंग्रेजी व स्पेनिश पढ़ते समय करते हैं। शिक्षण उपागम जिससे वे समझ पाते थे। विद्यार्थियों को शिक्षण उपागम की दक्षता ने दोनों प्रश्नों को समझने व अनुक्रिया करने में सहायता दी। विद्यार्थियों की सामान्य प्रभाव के प्रभावों प्रदान साथ परिचय की योग्यता ने दोनों प्रभावों के अर्थ को समझने में सहायता प्रदान की।

बायरेन्स, (1998) ने शिक्षकों के शिक्षण अधिगम व उनके कक्षागत अभ्यासों के विषय में ज्ञान का परीक्षण किया। इस अध्ययन में अल्पसंख्यक बच्चों की शिक्षण में संकेतान 191 शिक्षकों पर प्रदत्त संकलित किए।

18. **कार्बिन (1997)** के अध्ययन का उद्देश्य अध्ययन के प्रति अभिवृत्ति का परीक्षण करना था । मूल अध्ययन के नियंत्रण के लिए बहुमुखी विश्लेषण का प्रयोग किया गया। परिणामों से संकेत मिलता है कि जब विदेश में उपलब्धि पर विचार किया जाता है, तब यह एक महत्त्वपूर्ण कारक के रूप में उभरता है। साथ ही विदेशी अध्ययन के प्रति अभिवृत्ति का परीक्षण करना था। कुल उपलब्धि रचना में विषय विशिष्ट क्षेत्रों की उपलब्धि में दृष्टि से दोनों विषय की छात्राएँ अपनी जाति के छात्रों की अपेक्षा बेहतर पाई गई।

19. **नव बर्गेन (1998)** ने अनुदेशनात्मक स्तर शिक्षकों को बच्चों की योग्यता का ज्ञान शिक्षण प्रवृत्त क्रियाओं सीमा का और आयु का भाषा योग्यता पर प्रभाव का अध्ययन कया। हेडस्टार्ट के 11 वर्ष से 16 वर्ष तक के विद्यार्थी न्यादर्श में लिए गए अनुदेशनात्मक स्तर वयोग्यता का प्रयोग करते हुए मापन किया गया। अनुदेशनात्मक चरों व योग्यता के मध्य परीक्षण मल्टीपल रिग्रेसन समीकरण का संरचनात्मक समीकरण मॉडल में प्रयोग करते हुए परीक्षण किया गया। परिणामों से संकेत मिलता है कि अनुदेशनात्मक स्तर शिक्षकों को बच्चों की योग्यता का ज्ञान शिक्षक प्रवृत्त क्रियाओं की मात्र और बच्चों की आयु का योग्यता पर प्रत्यक्ष प्रभाव पड़ता है।

20. **कैली (1998**) ने अपने अध्ययन में विद्यार्थियों के सीखने के व्यवहार पर शिक्षण उपागम प्रयोग का विभिन्न भाषाओं में उपलब्धि पर विभिन्न सामाजिक आर्थिक स्तरों पर अध्ययन किया। न्यादर्श में लुधियाना शहर में स्थित व सांगुर जिले के ग्रामीण क्षेत्र में स्थित तीन मान्यता प्राप्त 12 श्री विद्यालयों से 12वीं कक्षा के 250 विद्यार्थियों (आयु विस्तार 13–18 वर्ष) का यादृच्छिक विधि से चयन किया गया। अध्ययन हेतु सामान्य मानसिक योग्यता समूह परीक्षण जलोटा व सिंह निर्मित पंजाबी संस्करण, 1982 टॉरेन्स टेस्ट ऑफ क्रिएटिव थिंकिंग वर्बल फर्म (1966) कुटपुस्वामी सामाजिक आर्थिक स्तर मापनी पुनराक्षित संस्करण 1981

शोधकर्त्ता द्वारा प्रयोग परीक्षण व शैक्षणिक उपलब्धि हेतु उच्च माध्यमिक स्तर पर किया गया है।

21. **एडवर्ड, (1999)** ने गांव के खेल का उपयोग करने और उन्हें भारगर्भित करने में तार्किक चिन्तन को प्रोत्साहन देती है।

22. **क्रो, (1999)** ने वाचन में निम्न उपलब्धि प्राप्त करने वाले विद्यार्थियों पर खेल थैरेपी के प्रभाव का अध्ययन किया। विद्यालयीन परिवेश में इस थैरेपी का उपयोग विद्यार्थियों की वजन उपलब्धि आत्म संकल्पना व नियंत्रण पथ पर प्रभाविता को जानने के लिये किया गया।

23. **ग्लेसविस्की (1999)** ने सांकेतिक खेल के द्वारा अधिग्रहण संभव बनाने के लिये प्रयास किया। यह निष्कर्ष निकाला कि भाषा अधिग्रहण की प्राथमिक अवस्थाओं के दौरान पिछड़ चुके विद्यार्थियों की भाषा के साथ उपयोग करने के लिए एक उचित एवं प्रभावी हस्तक्षेप आव्यूह सांकेतिक खेल के हस्तक्षेप के माध्यम से प्रदान किया गया।

24. मैरिक बी.सी. (1999) ने 12वीं कक्षा के विद्यार्थियों के लिए खाली समय वाचन के लिए क्रियात्मक अध्ययन प्रारूपित किया। अध्ययन का एक भी उद्देश्य पूरा नहीं हुआ, हालांकि विद्यार्थियों में कुछ सुधार देखा गया। तथा सीखने के व्यवहार पर शिक्षण उपगम के प्रभाव का अध्ययन किया गया।

25. **क्लेन व अन्य, (1999)** ने अपने अध्याय में शैक्षिक मनोवैज्ञानिक पाठ्यक्रम में सम्मिलित 10+12 उच्चतर माध्यमिक स्तर में 178 विद्यार्थियों के पूरक वाचन में अनुदेशनात्मक खेल एवं वाचन कार्य की पूर्ति करने दोनों ने ही अभिप्रेरणा पर सार्थक प्रभाव दिखाया। वाचन कार्य की पूर्ति न पश्च परीक्षण निष्पादित में

सार्थक रूप से योगदान दिया। हालांकि सांख्यिकी परिणाम सार्थक नहीं पाये गये। जो विद्यार्थियों के सीखने की प्रक्रिया पर निर्भर करता है।

26. **मारिया, (1998)** ने अधिगम पर खेल के लाभकारी प्रभावों का अध्ययन किया। उसने भाग अंग्रेजी को विदेशी भाषा के रूप में पढ़ने वाले 16 वर्ष की आयु से है। माध्यमिक स्तर उच्च विद्यालयीन विद्यार्थियों को अध्ययन में सम्मिलित किया। उसने पाया कि विद्यार्थियों के अधिगम पर खेल का सकारात्मक प्रभाव था।

27. **हेलेन, (2001)** दोनों बोर्डस के कक्षा 10वीं व 12वीं के हिन्दी शिक्षकों द्वारा हिन्दी शिक्षण में मूल्य सम्प्रेषण हेतु प्रयुक्त की जाने वाली प्रविधियों का अध्ययन।

निष्कर्ष के रूप में दोनों बोर्डस की कक्षाओं की गद्य एवं पद्य की पाठ्य पुस्तकों में पर्याप्त मूल्य निहित है।

28. **कीथ ई. डब्ल्यू (2005)** ने अनुदेशन के लिए खेलों के अनुरूपण का उपयोग करने के अवरोधकों एवं भविष्य संबंधी संभावनाओं के लिए चिंतन करने के बाद निष्कर्ष निकाला कि विद्यार्थी उनका भाषागत कार्यों पर दक्षता प्राप्त करने के लिये आवश्यक कदम उठाने में खुशी महसूस करते हैं, जो कि उन्हें खेल के चरण में लाता है, जिससे अभिप्रेरणा की कुछ आधारभूत समस्याओं का निराकरण किया जाता है।

परिणामतः समीक्षा के तौर पर समस्या उपत ''उच्च माध्यमिक स्तर के विद्यालय में विद्यार्थियों के सीखने के व्यवहार पर शिक्षण उपागम के प्रभाव का अध्ययन'' विषय से सम्बंधित है। जिसमें देश और विदेश में हुए सार्थक अध्ययन को शामिल किया गया है। जो कि शोधकर्ता द्वारा किया गया, संक्षिप्त प्रयास है।